# 17

# चेला बनने की कीमत

## ( 8:18-22 )

अध्याय 8 और 9 में आश्चर्यकर्मों के तीन सैट हैं (8:1-17; 8:23-9:8; 9:18-34), जिन्हें दो चर्चाओं में बांटा गया है, जो शिष्यता पर ज़ोर देते हैं (8:18-22; 9:9-17)। मत्ती 8:18-22 में शिष्यता पर दो पहले वार्तालाप हैं जिसमें दो जनों की बात बताई गई, जो यीशु के पीछे चलना चाहते थे। इस चर्चा का फोकस इस बात पर है कि यीशु अपने चेलों से क्या मांग करता है। मुख्य शब्द ''पीछे'' (*akoloutheō*) और ''जाना'' (*aperchomai*) सम्भवतया ज़ोर देने के लिए बार बार इस्तेमाल किए गए।

### वित्त (8:18-20)

**[18]यीशु ने जब अपने चारों ओर एक बड़ी भीड़ देखी तो झील के उस पार जाने की आज्ञा दी। [19]तब एक शास्त्री ने पास आकर उससे कहा, ''हे गुरु, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूंगा।'' [20]यीशु ने उससे कहा, ''लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिए सिर धरने की जगह नहीं है।''**

**आयत 18.** यीशु बेशक परमेश्वर का ईश्वरीय पुत्र था, पर अपनी माता मरियम के द्वारा वह मनुष्य का मानवीय पुत्र भी था (8:20)। यह बात सच होने के कारण उसमें भी थकावट की मानवीय निर्बलता थी। कफ़रनहूम में अपने पहुंचने के समय से ही उसे बीमार लोगों की भीड़ द्वारा घेर लिया गया था, जिस कारण उसे शारीरिक और मानसिक थकावट का अनुभव होने लगा था। **यीशु ने जब अपने चारों ओर** [इकट्ठा होते] **एक बड़ी भीड़ देखी तो** [अपने चेलों को] **झील के उस पार जाने की आज्ञा दी।** ''उस पार'' संकेत देता है कि गलील की झील को पश्चिम और पूर्व के दो भागों के रूप में देखा जाता था। इसे एक काल्पनिक सीधी रेखा के द्वारा बांटा गया था, जो यरदन नदी के प्रवेश और निकास के बिन्दुओं को जोड़ती थी। विशेष रूप से यह दिकापुलिस के इलाके से झील के पूर्वी ओर को कहा जाता था। कफ़रनहूम गलील की झील के उत्तर पश्चिम कोने पर था।

**आयत 19.** उस छोटी नाव पर बैठने से पहले ही जिसने उसे झील के पार ले जाना था, यीशु का सामना फिर से हो गया। **तब एक शास्त्री ने पास आकर उससे कहा, ''हे गुरु, जहां कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे पीछे हो लूंगा।''** ''शास्त्री'' (*grammateus*) वह होता था जो पुराने नियम के धर्मशास्त्र तथा अन्य महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों को बड़े परिश्रम से हाथ से उतारता था। अपने काम की विशेषता से, शास्त्री सचमुच में वचन के विद्वान बन गए थे। उन्हें व्यवस्था के सिखाने वाले कहा जाता था, जबकि आम तौर पर फरीसी सिखाने वाले नहीं होते थे।

इस शास्त्री की ईमानदारी भरे प्रश्न पर हमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है। यीशु के पीछे चलने की उसकी इच्छा की प्रेरणा व्यक्तिगत लाभ के लिए हो सकती है। उसने यीशु को ''हे गुरु'' (*didaskalos*) कहकर बड़े आदर से सम्बोधित किया। किसी शास्त्री का यीशु को इस प्रकार से सम्बोधन करना अपने आप में बड़ी बात थी। परन्तु बहुत से लोग, यहां तक कि यीशु के विरोधी भी उसे इसी प्रकार सम्बोधित करते थे (12:38; 19:16; 22:16, 24, 36)।

**आयत 20. यीशु ने** यह कहते हुए शास्त्री के इरादे की परख की, **''लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं, परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिए सिर धरने की जगह नहीं है।''** एक बार फिर उसने अपना संदेश देने के लिए प्रकृति (''लोमड़ियों,'' और ''पक्षियों'') का इस्तेमाल किया (देखें 6:26, 28)। यीशु का उत्तर ''बहुत हद तक इस परिस्थिति के लिए अपनाई जाने वाली सामान्य लोकोक्ति जैसा था।''[1] माइकल जे. विलकिन्स ने यीशु को यह कहते हुए दिखाया है कि उसकी सेवकाई ''सुविधाजनक लाभों के साथ एक संस्था नहीं होनी'' थी।[2]

यीशु रहने के लिए वास के न होने के अर्थ में ''बेघर'' नहीं था। उस समय वह कफ़रनहूम से जाने की तैयारी कर रहा था, जो अपनी सार्वजनिक सेवकाई के अधिकतर समय में उसका ठिकाना रहा लगता है। उसने मरियम, मारथा और लाज़र के घर में बैतनिय्याह में समय बिताया था (लूका 10:38, 39; यूहन्ना 12:1-3) और निश्चय ही अन्य घरों में भी उसका स्वागत किया गया था (देखें 10:11)। इसके बावजूद अपना कहने के लिए उसके पास घर नहीं था, व्यावहारिक रूप में यीशु एक घुमक्कड़ प्रचारक, घूमने वाला इवैंजलिस्ट था जो एक जगह नहीं टिकता था। पुराने समय के भविष्यवक्ताओं की तरह, हो सकता है वह आम तौर पर तारों की खुली छांवों में बाहर सोता हो, जिसमें तकिये का काम पत्थर करता हो। उसके पास अपनी पीठ पर कपड़ों से बढ़कर कुछ नहीं था। जोश से भरे शास्त्री को यीशु के पीछे चलना चुनने से पहले उस जीवन शैली पर विचार कर लेना आवश्यक था।

नगर-नगर घूमने पर यीशु को आम तौर पर ठुकरा दिया जाता था। उसके अपने लोगों ने (यूहन्ना 1:11) और यहूदिया ने भी उसे ठुकरा दिया (यूहन्ना 5:18)। गलील के लोगों ने उससे मुंह फेर लिया (यूहन्ना 6:66) और गदरेनियों ने उससे उनका तट छोड़ देने का आग्रह किया (8:34)। सामरी लोगों के नगर ने रखने से इनकार कर दिया (लूका 9:52, 53)। अन्त में, संसार ने उसे ठुकरा दिया (27:23)।

''मनुष्य का पुत्र'' प्रभु द्वारा अपने लिए सबसे अधिक इस्तेमाल किया जाने वाला विवरण है। मत्ती 8:20 में यह घटना उन अठासी बार में से पहली बार है जो उसने नये नियम में विशेष रूप से इस्तेमाल की। ''मनुष्य का पुत्र'' बेशक मसीहा के पद के रूप में इस्तेमाल किया जाता था (देखें दानिय्येल 7:13, 14), पर यह वह नाम है जिसे यीशु ने मनुष्यजाति के साथ बड़ी नज़दीकी से जोड़ा।[3] बड़ी विनम्रता के एक कार्य में, राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु ने अपने आपको हर सांसारिक लाभ से खाली करके मनुष्यों में एक भिखारी की तरह जीवन जिया (देखें फिलिप्पियों 2:5-8)।

## परिवार (8:21, 22)

**[21]एक और चेले ने उससे कहा, ''हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं।''**
**[22]यीशु ने उससे कहा, ''तू मेरे पीछे हो ले और मुर्दों को अपने मुर्दे गाड़ने दे।''**

**आयत 21.** दूसरे पूछने वाले को **एक और चेले ने** कहना इस बात का संकेत देता है कि वह और शास्त्री या तो मसीह के चेले थे या बन गए। यह मान लेना बहुत अधिक हो जाएगा कि यह व्यक्ति उन बारहों में से एक था, क्योंकि ''चेला'' (*mathētēs*) शब्द यहां पर बहुत सम्भव है कि व्यापक अर्थ में इस्तेमाल किया गया हो। इस पदनाम का इस्तेमाल बेशक बारहों के लिए हो सकता है पर यह आम तौर पर ''सीखने वाला'' ''शिक्षार्थी'' का सामान्य बोध कराता है और इसमें कोई आत्मिक संकेत नहीं है। यह किसी भी प्रकार के ''अनुयायी'' के लिए हो सकता है, चाहे वह काल्पनिक हो या सचमुच में समर्पित।

यहां पर लूका ने उस आदमी को यीशु की बुलाहट की बात जोड़ दी: ''मेरे पीछे हो ले'' (लूका 9:59; देखें मत्ती 8:22)। ऐसा लगता है कि वह चाहता था कि वह आदमी गलील की झील के पार उनके सफ़र के आरम्भ से ही नज़दीकी चेले के रूप में उसके साथ चले। उस आदमी ने उत्तर दिया, **''हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूं।''** हो सकता है कि उस समय यीशु के पीछे न चलने का उसका जवाब एक बहाना हो। कम से कम भी कहें तो वह सचमुच में चेला बनने से पहले परिवार की ज़िम्मेदारियों को रख रहा था (देखें 10:37; लूका 14:26)।

उस आदमी के बारे में पूरा-पूरा तो स्पष्ट नहीं है, पर तीन सम्भावनाएं पैदा होती हैं। पहली, वह व्यक्ति अपने पिता के साथ रहने के अवसर के लिए ही कह रहा था, जो हो भी सकता है और नहीं भी कि बीमार हो। घर में रहना और मरने तक अपने बुज़ुर्ग माता-पिता की देखभाल करना बेटों की ज़िम्मेदारी होती थी। जॉन मैकार्थर, जूनि. ने दावा किया कि इस व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल किया गया वाक्यांश ''एक सामान्य निकट पूर्वी अलंकार था जिसमें बेटे द्वारा परिवार के कामकाज में अपने पिता की मृत्यु तक सहायता के लिए जिम्मेदारी लेना और विरासत को बांटा जाना था।''[4] उसने आगे कहा कि मध्यपूर्व के भागों में आज भी इसी अभिव्यक्ति का इस्तेमाल होता है।

दूसरा, उस आदमी का पिता वास्तव में मर गया और वह जनाजे की उसकी रस्म में भाग लेना चाहता था। इसे केवल थोड़ी ही देर लगनी थी, क्योंकि लाश उसी दिन दफ़ना दी जाती थी (27:59, 60; प्रेरितों 5:5, 6, 10)। दफ़नाए जाने के बाद एक हफ़्ता शोक का होता था (उत्पत्ति 50:10; 1 शमूएल 31:13)। इसमें संदेह है कि यीशु ने किसी की भावनात्मक विनती को मना किया हो।

तीसरा, उस आदमी का पिता कुछ देर पहले मरा था और दफ़नाए जाने की पहली अवस्था पूरी हो चुकी थी, लाश को लपेट दिया गया था और कब्र में रखा जा चुका था। परन्तु बेटे ने लगभग एक साल के बाद लौटना था और हड्डियों को दफ़नाने के खाने में रखना था, जिसे शव स्थान कहा जाता था।[5] शव स्थान कब्र के पीछे बना एक आला होता होगा, जिसमें परिवार के बाद में मरने वाले सदस्यों के लिए स्थान बना रहता था। ऐसा होने पर वह आदमी यीशु के पीछे

चलने के गम्भीर समर्पण करने से पहले अपनी अन्तिम ज़िम्मेदारी को पूरा करना चाहता था।

मुर्दे को दफ़नाना, विशेषकर माता या पिता को वास्तव में एक पवित्र कर्त्तव्य था (उत्पत्ति 23:1-20; 25:7-10; 35:28, 29; 49:28-50:14)। इस्राएलियों को दी गई पांचवीं आज्ञा थी ''तू अपने पिता और अपनी माता का आदर करना'' (निर्गमन 20:12; व्यवस्थाविवरण 5:16) और कोई संदेह नहीं कि इसका अर्थ यह था कि वह व्यक्ति अपने माता-पिता को उचित रीति से दफ़नाए भी। रब्बियों की शिक्षा थी कि किसी के माता-पिता को दफ़नाना शेमा को याद करने या ताबीज़ पहनने के प्रतिबिन्ब के कर्त्तव्य से भी महत्वपूर्ण था।[6] बाद में मत्ती के विवरण में यीशु ने माता पिता का आदर करने की परमेश्वर की आज्ञा का बचाव किया (15:1-9)। तौभी यीशु के पीछे चलने के लिए सब बातों से वरीयता होनी आवश्यक थी।

**आयत 22. यीशु ने उससे कहा, ''तू मेरे पीछे हो ले और मुर्दों को अपने मुर्दे गाड़ने दे।''** उसका जवाब ''लोकोक्ति का अलंकार'' था जिसका अर्थ एक अर्थ में यह था कि ''संसार को संसार की अपनी बातों की परवाह करने दे।''[7] इसका अर्थ यह हो सकता है कि आत्मिक रूप से मरे हुए लोग शारीरिक रूप से मरे हुए लोगों को दफ़नाएं। एक सम्भावना यह है जो विडम्बना से भरी हुई है कि जो लोग कुछ समय के लिए शारीरिक रूप में मरे वे उन्हें दफ़नाएंगे जो अभी अभी मरे हैं। जो भी हो, यीशु उस आदमी को राज्य के संदेश को अनन्त जीवन की जरूरत में पड़े लोगों तक ले जाने की उससे बड़ी आत्मिक चिन्ता के प्रति समर्पित होने को कह रहा था।

लूका ने जोड़ा कि एक तीसरा पूछने वाला यीशु के पास आकर कहने लगा, ''हे प्रभु, मैं तेरे पीछे हो लूंगा; पर पहिले मुझे जाने दे कि अपने घर के लोगों से विदा हो आऊं'' (लूका 9:61)। यह दृश्य एलिय्याह नबी के एलीशा को बुलाने की याद दिलाता है। जब एलीशा ने वापस जाकर नबी के पीछे चलने से पहले अपने माता-पिता को अलविदा कहने की इच्छा की तो एलिय्याह ने उसे जाने दिया (1 राजाओं 19:19-21)। परन्तु यीशु शिष्यता की अपनी शर्तों में एलिय्याह से भी अधिक की मांग कर रहा था। उसने उत्तर दिया, ''जो कोई अपना हाथ हल पर रखकर पीछे देखता है, वह परमेश्वर के राज्य के योग्य नहीं'' (लूका 9:62)। यीशु का वास्तविक चेला होने के रूप में पूर्ण समर्पण की आवश्यकता होती है। यीशु उन मानकों को कम करने को तैयार नहीं था, जो चेला बनने के लिए आवश्यक होने थे।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

## यीशु का मनुष्य होना (8:20)

यीशु द्वारा आम तौर पर इस्तेमाल किया जाने वाला पद ''मनुष्य का पुत्र'' है। उसे अपने लिए ''परमेश्वर का पुत्र'' चुनने का हर अधिकार है, परन्तु उसने ''मनुष्य का पुत्र'' कहलाना चुना। इससे यह अर्थ निकलेगा कि यीशु अपने बारे में एक महत्वपूर्ण बात कह रहा था। एक ओर यह उसके पूर्णतया मनुष्य होने पर ज़ोर देता है। दूसरी ओर यह उसके छुटकारा देने वाले और अधिकारात्मक मिशन पर ज़ोर देता है। परमेश्वर मनुष्य बन गया ताकि वह हमारे साथ जुड़ सके और अपने साथ हमें जोड़ सके।

टिप्पणियां

[1]रॉबर्ट एच. माउंस, *मैथ्यू,* न्यू इंटरनैश्नल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मेसाचुएट्सः हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1991), 77. [2]ज़ौंडरवन इलस्ट्रेड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री, अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* सम्पा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन.: ज़ौंडरवन, 2002), 59 में माइकल जे. विलकिन्स, ''*मैथ्यू।*''[3]''मनुष्य का पुत्र'' पदनाम भविष्यवक्ता के मनुष्य होने पर ज़ोर देने के लिए यहेजकेलक की पूरी पुस्तक में मिलता है। [4]जॉन मैकआर्थर जूनि., द *मैकआर्थर न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीः मैथ्यू 8-15* (शिकागोः मूडी प्रैस, 1987), 24-25. [5]देखें मिशनाह *सन्हेद्रिन* 6.6; *पसाहिम* 8.8; *मोएद कतन* 1.5, 6. [6]मिशनाह *बेराक्रोथ* 3.1; टालमुड *बेराक्रोथ* 31ए। [7]मैकआर्थर, 25.